



# पत्र-पुष्प



## निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (11-06-19)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, स्व कल्याण और विश्व कल्याण की सेवा पर उपस्थित, सच्चे दिल से साहेब को राजी करने वाले, सदा एकरस स्थिति की सीट पर सेट रहने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - मुझे तो मीठे बाबा की और आप सबकी दुआयें चला रही हैं। संगमयुग पर मीठे बाबा से शान्ति और प्रेम की शक्ति सदा मिलती रहती है। बाबा ने आप सबको कहाँ-कहाँ से चुन-चुनकरके कितनी सुन्दर माला बना दिया है। बाबा कहते हैं बच्चे, अपने भाग्य को पहचानो कि मेरा भाग्य क्या है! सभी सच्ची दिल से यही कहते हो ना कि मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई! बाबा से जो मिला है, बाबा ने जो दिया है अगर वह सदा इमर्ज रहता है तो कभी अपसेट नहीं हो सकते। बाबा ने जो सिखाया है वो प्रैक्टिकल लाइफ में हो तो लाइफ में सदा लाइट रहेंगे।

बाबा ने इतना सब कुछ दिया है जो इच्छा मात्रम् अविद्या बना दिया। अब सिर्फ हमें ब्राह्मण सो फरिश्ता बनना है। कराने वाला सब करा रहा है, करने वाले कर रहे हैं। जो कुछ करना है अब कर लो। कल पर नहीं छोड़ना। सभी को यह अनुभव है ना कि कैसे कराने वाला कर रहा है, हम निमित्त हैं! जो साक्षी होकर पार्ट बजाते हैं वह सहजयोगी बन जाते हैं। उनके मुख से व्हाई व्हाई के बजाए सदा ही वाह बाबा वाह निकलता। उन्हें बाबा भी कहता वाह बच्चे वाह! यह है बच्चे और बाप का वन्डरफुल कनेक्शन और रिलेशन, मैं कौन, मेरा कौन.. इसका भान पक्का हो गया है। अन्त मते हमारी अच्छी गति होगी। आज भी अगर बाबा हमको खींच लेवे तो शुक्रिया बाबा। जो निश्चयबुद्धि हैं वह सदा निश्चित रहना जानते हैं, ऐसे नहीं मैं अच्छा रहूँ, एक्यूरेट रहूँ, नहीं। मेरे बाबा ने जो सिखाया है वही मेरी लाइफ में हो क्योंकि हमारी लाइफ अनेक आत्माओं को लाइट बना रही है।

सभी खुश और राजी हो ना! जो राजी है वही खुश है। जो खुश है वही राजी है। जो ज्ञान के सब रहस्यों को समझते हैं वो कभी नाराज़ नहीं होते। कभी यह भी नहीं बोलना कि यह बात मुझे भूल गयी या मेरे से यह भूल हो गयी! याद किसको कहा जाता है, वह हम सब अच्छी रीति से जानते हैं। जब बाबा की याद है तो और कोई बात याद आ नहीं सकती। न अपनी, न किसी की क्योंकि सब अच्छे हैं। मुझे किसी का फिकर नहीं है, बाबा ने फिकर से फारिग बेफिकर बादशाह बना दिया है। तो मुझे सदा बाबा की श्रीमत के प्रभाव में रहना है और कोई भी बात का प्रभाव नहीं। किसी की मत का भी प्रभाव नहीं, मनमत और परमत से फ्री हैं। अब कोई की व्यर्थ बातें जरा-सा भी टच न हो। क्यों, क्या सोचने मात्र से ही मेरी शक्ल चेंज हो जायेगी इसलिए बाबा ने जो अचल अडोल स्थिति की सीट दी है, उस पर बैठना है, हिलना डुलना नहीं है। बहुत सिम्पल बात है, सिर्फ बिन्दी लगाने का अक्ल हो, एक के साथ बिन्दी लगा दो तो कमाई ही कमाई होती रहेगी। बिन्दी की कितनी वैल्यु है, इससे मिट्टी भी मलाई बन जाती है। कहाँ मिट्टी कहाँ मलाई! बाबा को हमारी दृढ़ता बहुत अच्छी लगती है क्योंकि एक दृढ़ता में दृढ़ रहने से और सब गुण साथ देते हैं, सिर्फ जैसा फल चाहिए वैसा बीज धरती में डालते चलो। कमाल किसकी है, बीज बोने वाले की या फल देने वाले की! कहेंगे दोनों की ही कमाल है! तो सदा वाह बाबा वाह, शुक्रिया बाबा शुक्रिया... यही खुशी के गीत गाते, वातावरण में शान्ति, शक्ति और खुशी के वायब्रेशन फैलाते चलो। सभी सेवास्थानों पर योग का ऐसा अव्यक्ति वायुमण्डल बनाकर रखो जो हर एक आकर्षित हो बाबा से अपना जन्म सिद्ध अधिकार लेने आ जाये। अच्छा -

सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,  
बी. के. जानकी



## ये अव्यक्त इशारे



“मन्सा सकाश द्वारा सर्व की बुद्धियों को परिवर्तन करने की सेवा करो”

1) समय प्रमाण अब चारों ओर सकाश देने का, वायब्रेशन देने का, मन्सा द्वारा वायुमण्डल बनाने का कार्य करना है। अब इसी सेवा की आवश्यकता है क्योंकि समय बहुत नाजुक आना है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा रात को जागकर भी बेहद की सकाश देने की सेवा करते रहे। ऐसे आप भी समय निकाल यह सेवा करो। इस बेहद की सेवा से ही विश्व परिवर्तन का कार्य सम्पन्न होगा।

2) अब अपनी उड़ती कला द्वारा फरिश्ता बन चारों ओर चक्कर लगाओ और जिसको शान्ति चाहिए, खुशी चाहिए, सन्तुष्टता चाहिए, फरिश्ते रूप में उन्हें अनुभूति कराओ। वह अनुभव करें कि इन फरिश्तों द्वारा शान्ति, शक्ति, खुशी मिल गई।

3) अन्तःवाहक अर्थात् अन्तिम स्थिति, पावरफुल स्थिति ही आपका अन्तिम वाहन है। अपना यह रूप सामने इमर्ज कर फरिश्ते रूप में चक्कर लगाओ, सकाश दो, तब गीत गायेंगे कि शक्तियां आ गई.... फिर शक्तियों द्वारा सर्वशक्तिवान स्वतः ही सिद्ध हो जायेगा।

4) अभी तो कुछ नहीं है, अभी तो सब कुछ होना है, डरना नहीं, खेल है। विनाश नहीं, परिवर्तन होना है। सबमें वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होनी है। इसलिए रहमदिल बन सर्व शक्तियों द्वारा परेशान आत्माओं को शक्ति की सकाश दे रहम करो।

5) जैसे साकार रूप को देखा, कोई भी ऐसी लहर का समय जब आता था तो दिन-रात सकाश देने, निर्बल आत्माओं में बल भरने का विशेष अटेंशन रहता था, रात-रात को भी समय निकाल आत्माओं को सकाश भरने की सर्विस चलती थी। तो अभी आप सबको लाइट माइट हाउस बनकर यह सकाश देने की सर्विस खास करनी है जो चारों ओर लाइट माइट का प्रभाव फैल जाए।

6) इस देह की दुनिया में कुछ भी होता रहे, लेकिन फरिश्ता ऊपर से साक्षी हो सब पार्ट देखते सकाश देता रहे। आप सब बेहद विश्व कल्याण के प्रति निमित्त हो तो साक्षी हो सब खेल देखते सकाश अर्थात् सहयोग देने की सेवा करो। सीट से उतर कर सकाश नहीं देना। ऊंची स्टेज पर स्थित होकर देना तो किसी भी प्रकार के वातावरण का सेक नहीं आयेगा।

7) जैसे बाप अव्यक्त वतन, एक स्थान पर बैठे चारों ओर के विश्व के बच्चों की पालना कर रहे हैं ऐसे आप बच्चे भी एक स्थान पर बैठकर बाप समान बेहद की सेवा करो। फालो

फादर करो। बेहद में सकाश दो। बेहद की सेवा में अपने को बिजी रखो तो बेहद का वैराग्य स्वतः ही आयेगा।

9) यह सकाश देने की सेवा निरन्तर कर सकते हो, इसमें तबियत की बात, समय की बात.. सब सहज हो जाती है। दिन रात इस बेहद की सेवा में लग सकते हो। जब बेहद को सकाश देंगे तो नजदीक वाले भी ऑटोमेटिक सकाश लेते रहेंगे। इस बेहद की सकाश देने से वायुमण्डल ऑटोमेटिक बनेगा।

10) आप ब्राह्मण आदि रत्न विशेष तना हो। तना से सबको सकाश पहुंचती है। तो कमजोरों को बल दो। अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगाओ। दूसरों को सहयोग देना अर्थात् अपना जमा करना। अभी ऐसी लहर फैलाओ – देना है, देना है, देना ही देना है। सैलवेशन लेना नहीं है, सैलवेशन देना है। देने में लेना समाया हुआ है।

11) अगर अभी से स्व कल्याण का श्रेष्ठ प्लैन नहीं बनायेंगे तो विश्व सेवा में सकाश नहीं मिल सकेगी। इसलिए अभी सेवा में सकाश दे, बुद्धियों को परिवर्तन करने की सेवा करो। फिर देखो सफलता आपके सामने स्वयं झुकेगी। मन्सा-वाचा की शक्ति से विघ्नों का पर्दा हटा दो तो अन्दर कल्याण का दृश्य दिखाई देगा।

12) ज्ञान के मनन के साथ शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प, सकाश देने का अभ्यास, यह मन के मौन का या ट्रैफिक कन्ट्रोल का बीच-बीच में दिन मुकरर करो। अगर किसको छुट्टी नहीं भी मिलती हो, सप्ताह में एक दिन तो छुट्टी मिलती है, उसी प्रमाण अपने-अपने स्थान के प्रोग्राम फिक्स करो। लेकिन विशेष एकान्तवासी और खजानों के एकानामी का प्रोग्राम अवश्य बनाओ।

13) चारों ओर मन का दुःख और अशान्ति, मन की परेशानियां बहुत तीव्रगति से बढ़ रही हैं। बापदादा को विश्व की आत्माओं के ऊपर रहम आता है। तो जितना तीव्रगति से दुःख ही लहर बढ़ रही है उतना ही आप सुख दाता के बच्चे अपने मन्सा शक्ति से, मन्सा सेवा व सकाश की सेवा से, वृत्ति से चारों ओर सुख की अंचली का अनुभव कराओ। हे देव आत्मायें, पूज्य आत्मायें अपने भक्तों को सकाश दो।

14) साइन्स वाले भी सोचते हैं ऐसी इन्वेन्शन निकालें जो दुःख समाप्त हो जाए, साधन सुख के साथ दुःख भी देता है। सोचते जरूर है कि दुःख न हो, सिर्फ सुख की प्राप्ति हो

लेकिन स्वयं की आत्मा में अविनाशी सुख का अनुभव नहीं है तो दूसरों को कैसे दे सकते हैं। आप सबके पास तो सुख का, शान्ति का, निःस्वार्थ सच्चे प्यार का स्टॉक जमा है, तो उसका दान दो।

15) अब सर्व ब्राह्मण बच्चों को यह स्पेशल अटेन्शन रखना है कि हमें चारों ओर पावरफुल याद के वायब्रेशन फैलाने हैं, क्योंकि आप सब ऊंचे ते ऊंचे स्थान पर रहते हो। तो जो ऊंची टावर होती है, वह सकाश देती है, उससे लाइट माइट फैलाते

हैं। तो रोज़ कम से कम 4 घण्टे ऐसे समझो हम ऊंचे ते ऊंचे स्थान पर बैठ विश्व को लाइट और माइट दे रहा हूँ।

16) बापदादा बच्चों से चाहते हैं कि अभी फास्ट सेवा शुरू करें। जो हुआ वह बहुत अच्छा। अब समय प्रमाण औरों को ज्यादा वाणी का चांस दो। अभी औरों को माइक बनाओ, आप माइट बनकर सकाश दो। तो आपकी सकाश और उन्हीं की वाणी, यह डबल काम करेगी तब प्रत्यक्षता होगी।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

02-02-15

मधुबन

**“मन-बुद्धि को चारों सबजेक्ट में बिजी कर दो तो विकारों को जीतना सहज है”**

**दादी जानकी जी**

**प्रश्न:-** क्रोध का सामना कैसे करें? यदि मुझे क्रोध आता है तो उसे कैसे खत्म करें?

**उत्तर:-** कहने में आता है काम महान शत्रु है परन्तु पुरुषार्थ करते काम महा शत्रु को जान जब उस पर पूरी तरह से विजय पहन ली, तो क्रोध भी आपेही चला जायेगा। काम की थोड़ी अंश है तो क्रोध नहीं जायेगा। क्रोध जा भी सकता है पर मोह वश या लोभ वश क्रोध ज्यादा होता है। कोई भी विकार को खत्म करना है तो वास्तव में कहने में काम, क्रोध, लोभ, मोह के पिछाड़ी अहंकार आता है, लेकिन पहला वो है इसलिए देही-अभिमानि स्थिति पर ध्यान रखना है। देह से न्यारा तो प्रभु का प्यार। प्रभु का प्यार मीठा बना देता है। जितना प्रभु का प्यार उतना वो मीठा होगा। भारत में परमात्मा को प्रभु भी कहते हैं, ईश्वर भी कहते हैं। ईश्वर तेरी गत मत न्यारी, सद्गति करने की मत न्यारी। प्यार कहेंगे प्रभु का।

अभी क्रोध शब्द जो कहते हैं ना, अच्छा नहीं लगता है, कभी गलती से गुस्सा आता है, नाराज़ होते हैं तो यह भी अपने आपको गुप्त और सच्चा पुरुषार्थी बन अन्दर चेक करके चेंज करना है। कभी भी किसी से भी खुश रहना, राज़ी रहना यह भाग्यवान का काम है।

ज्ञान, योग, धारणा सेवा, चारों सबजेक्ट में सेवा को चौथा नम्बर क्यों दिया जाता है? परन्तु कइयों का ज्ञान में, योग में इतना अटेन्शन नहीं है, पर सेवा में बहुत है। मैंने देखा है आजकल यहाँ सभी का ज्ञान योग धारणा में अटेन्शन है, जिस कारण सेवा अच्छी फैली हुई है। पहले मन्सा, फिर वाचा, फिर कर्मणा। मैंने कभी कर्मणा सेवा नहीं की, यज्ञ सेवा की है। तन मन धन द्वारा यज्ञ सेवा। एक बारी ब्रह्मा बाबा सारे घर में चक्र

लगाते पूछ रहे थे कौन क्या सेवा करता है? कोई कोई को सोने की बहुत आदत थी, तो बाबा ने कहा युक्ति रचो यह सेवा करे। तो ऐसों को कहा चलके अनाज साफ करो, तो कहा अनाज की जो मिट्टी है ना वो तबियत खराब कर देती है इसलिए अनाज साफ नहीं कर सकते हैं। अच्छा चलो भण्डारे में रोटी पर घी लगाओ। तो कहा वहाँ मुझे ठीक नहीं लगता है। फिर कहा अच्छा रोटी बेलो, तो कहा बाँहों में दर्द पड़ता है। फिर कहा रोटी का पेड़ा बनाओ... मतलब कुछ न कुछ बिजी करो।

कइयों को तो सेवा से बहुत प्यार होता है क्योंकि मन्सा में कुछ सुस्ती है या कोई गड़बड़ है तो सेवा में लग जाने से ठीक हो जाता है। प्यार से भोजन बनाओ तो खुशी मिलती है। और कुछ नहीं करो तो पानी पीने के मटके अच्छी तरह से साफ करो। यह भी बहुत अच्छा पुण्य कर्म है। मतलब पुण्य कर्म न करने से पुराने पाप कटेंगे नहीं। अब कोई पाप न हो, साथ-साथ जो पुराने पाप रहे हुए हैं वो खलास हो जाएं। पाप और पुण्य इसको भी अच्छी तरह से जानना है। यह पाप है, यह पुण्य है। यह कर्म है, यह विकर्म है, यह अकर्म है, यह श्रेष्ठ कर्म है, ऐसे कितने प्रकार के कर्म हैं और कौन-से कर्म अच्छे हैं, उसे जान करके पहले कर्म पर ध्यान देना है ताकि जिससे मैं कर्मातीत बनूँ, तभी अव्यक्त स्थिति होगी। सारा दिन और कोई चिंतन नहीं है पर कर्मातीत बनने का और अव्यक्त बनने का कर्म करना है। कर्मातीत और अव्यक्त बनेंगे तो ब्राह्मण से फरिश्ता बन जायेंगे।

सबसे पहले तो कौन समझता है मैं ब्राह्मण हूँ? एक होता है एकदम पक्का ब्राह्मण, नहीं तो थोड़ी युद्ध है या थोड़ा चिंतन

हुआ तो वो क्षत्रिय है। थोड़ी भी चिंता हुई, अपनी चिंता या किसी की भी कोई चिंता करने वाला जो होता है तो वो वैश्य है। फिर शूद्र तो पता ही है इसलिए पहले पक्का ब्राह्मण बनना है तो एक बाबा दूसरा न कोई, इसमें दृढ़ रहना है। सर्व सम्बन्ध एक बाबा के साथ रखना है। अभी सभी दो मिनट ऐसे पक्के ब्राह्मण की स्थिति में बैठो। यह जो क्षत्रिय वैश्य की बात बताई है ना वो ध्यान रखना। जो निश्चित हैं, निश्चित भावी बनी पड़ी है, इस पर अडोल हैं, अचल हैं, स्थिर हैं, एकाग्रचित्त हैं - वह होगा अन्तर्मुखी बनने से। घड़ी-घड़ी चंचल बुद्धि है तो वो बच्चे मुआफिक थक जाते हैं। बाबा को भी ऐसे बच्चे चाहिए जो अडोल अचल स्थिर रहें, ऐसी आपस में रूहरिहान करो।

अभी कौन समझता है हम फरिश्ता बन रहे हैं? मेरे को फरिश्ता बनना बड़ी बात नहीं है परन्तु शरीर अच्छी परीक्षा ले रहा है परन्तु उनको देखती नहीं हूँ। क्लास में खैच होती है। इस टाइम मधुबन में भी होती है, भले छोटा संगठन हो। मैं समझती हूँ, यहाँ कोई मिस नहीं करता है खैचके सब यहाँ आ जाते हैं। भक्तिमार्ग में भी नुमाशाम को सत्संग करना अच्छा लगता है।

यह अटेन्शन रखना है पहले निराकारी स्थिति में रहना है। कर्मातीत स्थिति, अव्यक्त स्थिति, फरिश्ता स्थिति... जिसको अन्दर से स्थिति ऊंची बनाने की भावना है, उसको वायब्रेशन्स फैलाना बहुत अच्छा लगता है। अच्छा।

## दादी जानकी जी दूसरा क्लास

**“हम सब एक फैमिली के हैं, हमें पॉजिटिव देखना, सोचना और बोलना है”**

दुनिया को अपनी फैमिली समझना बहुत अच्छा है। फैमिली में सभी बहन भाई हैं, माँ बाप एक ही है पर वन्दरफुल है। आप सभी जो मानते हो समझते हो आप सब मेरे बहन भाई हो, हमारा माँ बाप एक है, हाथ उठाओ। आपस में एक दो के साथ ऐसे मुस्कराते हुए मिलो।

न चिंता है, न चिंतन है। चिंता होती है कौन करेगा! कैसे होगा? चिंतन में पता नहीं कहाँ से कहाँ चले जायेंगे। टाइम मनी जो खर्च करते हैं, एनर्जी सब वेस्ट जा रही है। हमारा टाइम, मनी, एनर्जी वेस्ट न हो, सब सफल हो।

दुनिया को एक समझना, अपनी फैमिली समझना यह सिम्पल बात है। इसके लिए बहुत लिखना पढ़ना भी नहीं है। किसी के कमरे में जाओ ना, बहुत बुक्स फाइलें, कागज़ आदि होंगे। मेरे कमरे में कुछ भी नहीं, टेबल कुर्सी भी नहीं है, जो मैं बैठके लिखूँ वा पढ़ूँ। हमारे बाबा की वाणी मुरली है, क्योंकि परमात्मा मेरी माता है, पिता है, टीचर है, सखा है, सतगुरु है। तुम भी सब ऐसे समझो ना, तो तुम भी इतने अच्छे बन जायेंगे। बिना कोई खर्च के बिना कोई मेहनत के।

आप तो न्यूज़ पेपर पढ़ेंगे, टी.वी. देखेंगे, दुनिया की खबरें बुद्धि में रखेंगे। हमारे पास टेलीविज़न ही नहीं है। कभी भी न्यूज़ पेपर हमारे हाथों में नहीं होगा। बहुत पहले किसी ने कहा था कि तुम न्यूज़ पेपर पढ़ोगी तो तुमको दुनिया का पता चलेगा! तो मैंने सोचा रात को टेलीविज़न देखते सोयेंगे, सुबह को न्यूज़ पेपर पढ़ेंगे तो फिर उन्हीं की बुद्धि में क्या होगा? हमको कितना साल हुआ ब्रह्माकुमारी बनके, 78 वर्ष हो गया,

कभी टेलीविज़न नहीं देखा है। किसी ने कहा यह पढ़के देख, ताकि कम-से-कम पता तो चले कि आज कौन-सी सिनेमा आने वाली है, उसमें कौन-से धर्म के बारे क्या बात है! मैंने कहा, अच्छा। जब सेवा के लिए अप्रैल 1974 में लण्डन जाने की बात सुनी तो मैंने सोचा कि वहाँ जाके क्या करूँगी! मुझे इंगलिश आती नहीं। मैं अन्दर से यही सोचती थी कि मुझे भगवान ने भेजा है, क्यों क्या का क्वेश्चन नहीं था। मुझे पॉजीटिव निगेटिव शब्द का भी पता नहीं था। लेकिन यह सब पॉजीटिव सोचना, बोलना, देखना..इसकी कमाल देखो। आप इतने सब सभा में बैठे हो। तो सेवा क्या है? वी आर वन फैमिली, वन्दरफुल।

5 अंगुली बराबर नहीं होती हैं, पर 1 अंगुली भी ठीक न हो तो कुछ नहीं हो सकता है। हम सब मिल करके एक श्रीमत पर चलते रहें। भिन्न-भिन्न मत पर नहीं, क्योंकि एक है मनमत, दूसरी है श्रीमत, फिर शास्त्रों की मत और अपने पोजीशन और पद की मत। अभी हमारे को यहाँ जो पढ़ाई पढ़ाई जा रही है जिससे ईस्ट हो, वेस्ट हो, बट वी आर आल दी बेस्ट हो। यह सारा वर्ल्ड वन फैमिली है। सभी को मंजूर है यह वर्ल्ड हमारी फैमिली है! हम सब एक फैमिली के मेम्बर्स हैं, पर इगो अटैचमेंट से फ्री हैं। इगो EGO, इगो खराब है तो इगो को छोड़ना इजी है? इसके लिए इगोलेस वाइसलेस, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बनना है। बड़ी-बड़ी बातें नहीं हैं, सिर्फ निराकारी आत्मा शरीर में है पर अभिमान नहीं है, अटैचमेंट नहीं है। इगो, अटैचमेंट अन्दर दुःखी बनाता है। लोभ भी कम

नहीं है इसलिए यह सब अब मुझे नहीं चाहिए। मेरे पास पर्स भी नहीं है, रिंग भी नहीं है, एक रूमाल है, वो भी कागज़ का। हाँ, मुझे एक बैज जरूर है वो भी मेरे बैज पर लिखा हुआ है शिवशक्ति, जिसको इन लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना हो तो लक्षण ऐसे हों फिर कर्म ऐसे करो जो उसको देख करके मनुष्य

रूप में फरिश्ता दिखाई पड़े।

अभी सभी मेडीटेशन करेंगे। मेडीटेशन क्या होता है? पीस, लव, हैपीनेस, पॉवर, .. पीस यानी जो टुकड़ा टुकड़ा हो जाता है वो जुड़ जाता है इसलिए थींक नो इविल, डोंट थींक। अच्छा - ओम् शान्ति।

## दादी जानकी जी तीसरा क्लास

### “विदेही बनने के अभ्यास के साथ ब्रह्मा बाप समान ट्रस्टी बनना”

अभी सबकी स्मृति, दृष्टि, वृत्ति सब बदल गयी है ना! जैसा लक्ष्य रखते हैं वैसे लक्षण आने शुरू हो जाते हैं। अभी त्रिमूर्ति का ज्ञान मिलने से ब्रह्मा, विष्णु, शंकर समान त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बन गये हैं। अभी तपस्या करनी है तो यह काले कलर के कपड़े नहीं पहनें। और ऐसे श्रेष्ठ कर्म करें जो नर से नारायण समान बनें और नारी लक्ष्मी समान बने। अभी हरेक बिन्दी लगाते कदम कदम में पदमों की कमाई जमा करते आगे बढ़ते रहो।

(दादी को बीच-बीच में बहुत खाँसी आ रही थी, श्वास से तकलीफ थी) तो दादी ने कहा बाबा मेरा यह शरीर ऐसा है क्या कुछ... तो दादी गुल्जार कहती है पूर्व जन्म का कोई कर्म का हिसाब है इसलिए यह शरीर कैसा भी हो पर सेवा तुम्हारा श्रृंगार है। तो डॉक्टरों ने भी देखा, शरीर कैसा भी है पर सेवा

में टाइम पर हाज़िर हो जाता है क्योंकि सेवा की भावना है तो सब कार्य सुख शान्ति सम्पन्न हो जाते हैं। हर घड़ी को सफल करना है। आप सबको मिलने आये हैं तो सबको मुबारक है क्योंकि आप सबका भी यह नया जन्म है। शान्ति मेरा धर्म है, शान्ति मेरा कर्म है। अशरीरी बाप हमें भी अशरीरी बनाने आया है, विदेही बाप हमें वर्सा देता है, बाप शिक्षक है तो ट्रस्टी बनने की पढ़ाई पढ़ाता है। मैं भी आपको यह गिफ्ट देती हूँ - विदेही न्यारा हो रहो, ब्रह्मा बाप समान ट्रस्टी मेरा कुछ नहीं शरीर भी मेरा नहीं, तो हमारे भी रथ को निमित्त बनाया, मेरे को तेरे में परिवर्तन करने का प्रैक्टिकल वर्सा वरदान और आशीर्वाद पा करके सभी ब्रह्मा विष्णु शंकर समान त्यागी तपस्वी सेवाधारी होके रहना। ठीक है।

### “पुण्य का खाता जमा करना है तो दुआयें दो और दुआयें लो”

(गुल्जार दादी जी का क्लास )

बाबा ने हम सबकी कितनी लम्बी तकदीर की लकीर खींच दी है। वैसे कोई भी महात्मा, धर्मात्मा अगर आशीर्वाद देते हैं तो एक जन्म के लिये देते हैं। पुत्रवान भव, धनवान भव, आयुष्यवान भव... वो भी सही हो कि नहीं, कोई भरोसा नहीं। लेकिन शिवबाबा ने हमारी तकदीर 21 जन्मों की गैरण्टी से खींच ली, यह कम बात नहीं है। और इसमें कोई संकल्प नहीं उठ सकता है कि होगा या नहीं होगा... क्योंकि परमात्मा को कहा ही जाता है, सत्य ही शिव है, शिव ही सत्य है। ऐसे बाप को 63 जन्म से भूले हुए हैं इसलिए दुःखी हैं। अगर कोई कुछ भूलता है तो उसको बार-बार याद दिलाया जाता है। इसलिये बाबा भी रोज़-रोज़ कहते मुझे याद करो, मुझे याद करो तो मैं

तुम्हें सब प्राप्ति कराऊंगा।

दुआयें देना और दुआयें लेना इससे पुण्य का खाता जमा हो जाता है। तो अपनी चेकिंग अपने को ही करना है। अपनी शक्ल अपने को ही देखना होता है। अपना पुरुषार्थ अपने को ही करना होता है। इसके लिये अपना जज आपेही बनके अपने ऊपर पूरा अटेन्शन रखना है।

जितना हम बाबा को प्यार करते हैं उतना ही बाबा हमको प्यार करता है। चतुरसुजान बाबा देता बहुत कुछ है लेकिन पहले कण्डीशन डालता है। जैसे बाबा कहता है एक कदम आपकी हिम्मत का फिर हजार कदम मदद बाप की। हम सबको बाबा कहते तुम निमित्त हो, यह निमित्त भाव ही योगी

बनाता है। अगर हमारे में निमित्त भाव नहीं है तो हमारा योग भी पॉवरफुल नहीं हो सकता है क्योंकि निमित्त भाव में ही निर्मानता है।

मनन शक्ति हमारी ज्यादा होनी चाहिए, जितना मनन होगा उतना हमारी मन बुद्धि बिजी रहेगी और व्यर्थ संकल्प कम आयेंगे। अन्तर्मुखता में रहो तो जो आवश्यक है वही ख्यालात चलेंगे। त्रिकालदर्शी क्यों क्या... के संकल्पों में अपने समय और शक्ति को यूज करके अपना जमा का खाता कम नहीं करेगा। तो हम लोग अपनी स्थिति पर अटेन्शन दें, दूसरी बातों में ज्यादा नहीं जाओ। सेवा करना कोई बड़ी बात नहीं है। मुख पर मुस्कराहट हो, इसके लिये हर रोज़ एक स्वमान बुद्धि में रखो। स्वमान के स्मृति-स्वरूप बनने का अभ्यास करो। यह अभ्यास अभी नहीं करेंगे तो अन्त में कैसे करेंगे, जिस चीज का अभ्यास नहीं होता है वो समय पर याद नहीं आता है। समय पर वो धोखा दे देगा। तो स्मृति कितना समय रही? कितनी परसेन्ट रही? इसका चार्ट अपनी डायरी में रखना चाहिए।

यह संगम का समय बहुत मूल्यवान है, अगर हम अलबेले

और आलस्य में रहे तो समय पर धोखा खायेंगे। और उस समय कुछ कर भी नहीं सकेंगे। टू-लेट का बोर्ड लगने के बाद कुछ नहीं कर सकेंगे। अभी फिर भी कुछ चांस है, कुछ करने का। और करने वाले को बाबा की मदद भी एक्स्ट्रा मिलती है। तो वास्तव में बाबा से इतना इज़ी कनेक्शन हो जो कुछ भी हो जाये, तो हमारे सामने पहले बाबा आये। तो चेक करो पहले बाबा सामने आता है या और बातें आती हैं या कोई आत्मायें आती हैं? कोई भरोसा नहीं समय का, ऐसे में अगर हम बाबा को छोड़ करके बातों को याद करते रहे तो क्या होगा! इसलिये हर एक को अपने ऊपर पूरा अटेन्शन देना है। हम खुद पॉवरफुल हैं तो हमें देख अन्य भी पॉवरफुल ही दिखाई देंगे। हम अलबेले तो सब अलबेले होते हैं। जो विशेषता हमारे में होगी वही विशेषता दूसरों में भी आयेगी। संग का रंग लगता है इसलिये जिस नियम में हम ढीलें होंगे वही ढीलापन सामने वाले में भी होगा, यह एक नेचुरल कनेक्शन है। और इसका बोझ भी बढ़ता रहता है। तो जो सदा जी हज़ूर करता है उनके आगे बाबा हज़ूर हाज़िर हो ही जाता है, यह अनुभव सदा करो तो आगे बढ़ते रहेंगे। अच्छा - ओम् शान्ति।

## दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

### “अन्तर्मुखी बन साइलेन्स की शक्ति से अशरीरी बनने का अभ्यास करो”

बाबा रोज़ मुरली में कहता—हे बच्चे अशरीरी बनो, अन्तर्मुखी बनो, तो क्या सचमुच हम सभी अशरीरी बनने का ऐसा अभ्यास करते कि यह देह का भान भी भूल जाए, देही-अभिमानि बन जाएं? यदि हम सबका लक्ष्य है कि हमें कर्मातीत होना है तो यह स्थिति जरूर बनानी होगी। हमें तो बाबा का सामने में वह चित्र आता जब पिछाड़ी के दिनों में दिन-रात बाबा से यही अनुभव होता था कि बाबा कितना इन सारी प्रवृत्तियों से परे, फरिश्ते रूप में घूम रहा है। हम आते जाते थे, तो पहले बाबा हम सब बच्चों से बहलता, आधा-एक घण्टा बातें करता लेकिन पिछाड़ी में तो बाबा को सर्विस समाचार भी चार शब्दों में सुनाओ तो वह भी बाबा आधे शब्द में ही सुनकर समा लेता। कमरे में जाओ तो ऐसे लगता कि बाबा इस देह से परे-परे हो बैठा है। हाँ, बच्ची आई हो। अच्छा, ठीक है। साइलेन्स। कमरे में जाते थे तो सोचते थे कि बाबा को यह-यह सुनायेंगे लेकिन बाबा एक शब्द में सुनकर जान लेता और अनुभव करा देता कि बाबा बिल्कुल डीप साइलेन्स में, जैसे इस देह की दुनिया से परे देही हो बैठा है। बाबा को एक आवाज भी पसन्द नहीं आता था। ऐसे ही अनुभव होता था कि

बाबा कहाँ सूक्ष्मवतन, अव्यक्त वतन से भी परे मूलवतन में बैठे हैं। दृष्टि भी देता था तो लगता था बाबा हमें भी मूलवतन में ले जा रहे हैं। और बच्चों को भी बाबा यही इशारा करता कि बच्चे, तुम्हें भी यह अभ्यास बहुत करना है। अशरीरी भव, अशरीरी भव। यह अभ्यास इतना गहरा हो जो आत्म-अभिमानि बन जाओ। ऐसे साइलेन्स में रहो जो कोई भी सामने आये तो वह भी आपकी साइलेन्स की शक्ति से इस देह के भान को भूल जाये। इसके लिए आत्मा भाई-भाई हूँ, यह अभ्यास पक्का करना है। अब ऐसी शान्ति की, गहरे योग की अनुभूति सबको करनी है। तो जहाँ तक हो सके सभी भाई-बहिनें विशेष योग का अभ्यास, साइलेन्स का अभ्यास, आवाज से परे जाने का अभ्यास, अशरीरी बनने का अभ्यास करो। अब बाहरमुखता के वातावरण को बन्द करके अन्तर्मुखी बनने का, डेड साइलेन्स में रहने का विशेष अटेन्शन रखो। इससे जो भी स्वयं की स्व स्थिति में, संगठन में अथवा यज्ञ में छोटे-मोटे विघ्न आते, वातावरण होता, वह समाप्त हो जायेगा। इसके लिए अब एक-दूसरे को योग के वायब्रेशन्स दो, स्नेह के वायब्रेशन्स दो। प्यारे बाबा के प्यार में खो जाने का वातावरण बनाओ। भल और

कोई चिंता न हो, पर अपनी उन्नति की चिंता सबको जरूर करनी है। यदि ब्राह्मण परिवार में कोई एक भी उल्टे कर्म करता है या किसी की वृत्तियों में भी गलत वायब्रेशन्स हैं तो सारे वातावरण को खराब कर देता है। इतनी हर एक की जवाबदारी है। चाहे हम चलते हैं, खाते हैं, घूमते हैं, कर्म करते हैं, चाहे सोते हैं, बहलते हैं, चिंतन करते हैं, परचिंतन करते हैं... इन सबका एक्शन, रिएक्शन जरूर होता है। अच्छा करते तो भी 100 गुणा रिटर्न है, अगर कोई गलत करते तो भी 100 गुणा दण्ड है।

तो क्या हम ऐसे ही समझकर चलते कि यह जो समय चल रहा है, यह भी हमें अन्तिम घड़ियों की वारनिंग देता। तो सूक्ष्म में बार-बार यह वायब्रेशन्स जरूर आते कि अभी यह अन्तिम पुराने शरीर भी कब तक? यह पुरानी दुनिया भी कब तक? रोज़ बाबा इशारा करते लेकिन ऐसे तो नहीं सोचते कि बाबा तो सालों से कहते रहते हैं? विनाश तो होता नहीं, जब होगा तब देख लेंगे। ड्रामा में जो पुरुषार्थ करना होगा, वही होगा! पुरुषार्थ के लिए तो अभी बहुत टाइम है! हमें कोई हठयोग थोड़ेही करना है, हमारा तो सहजयोग है, घूमो-फिरो, खाओ-पिओ, टी.वी. देखो, हँसो-बहलो, नाचो ..... हम समझते हैं हम इसलिए ब्राह्मण नहीं बने हैं, बिल्कुल नहीं। अगर ऐसा कोई सोचकर चल रहे हैं तो बहुत बड़ा बोझ अपने ऊपर ले रहे हैं। जो परचिंतनों में, तेरी-मेरी बातों में टाइम वेस्ट करते, वे अनेक बाबा के बच्चों का बोझ ले रहे हैं। इस बोझ का हिसाब धर्मराजपुरी में देना पड़ेगा। हम बाबा के बच्चों के लिए अनेक बन्धन हैं, हम निर्बन्धन नहीं हैं। हमारा तो कहते हैं हम मुये मर गई दुनिया। हम बाबा तेरे पर बलिहार हो गये हैं। हमारे लिए दुनिया मरी पड़ी है। न हम दुनिया के हैं, न दुनिया हमारी है। हम दुनिया को पैगाम देने वाले पैगम्बर हैं। और कोई से किसी भी प्रकार का बंधन नहीं है। सभी को पैगाम देना, सन्देश देना... बाबा ने हम बच्चों को यह सेवा की ड्यूटी दी है लेकिन स्व-उन्नति के लिए बाबा ने कहा है हे बच्चे, तुम हो बेहद के वैरागी, बेहद के त्यागी और बेहद के तपस्वी। तुम राजऋषि हो, तुम राजयोगी हो। एक बाबा के सिवाए तुम्हारा कोई नहीं। तुम बाबा के प्राण हो, बाबा तुम्हारे प्राण हैं और कोई नहीं। तो हमारा दोस्त भी खुदा दोस्त है, हम आपस में दोस्त नहीं हैं। बहुत आपस में दोस्ती बनाके रखते हैं। लेकिन बाबा कहते अगर कोई अपना पर्सनल दोस्त बनाता तो खुदा उनका दोस्त नहीं है। हम सब ईश्वरीय फैमिली के हैं, हमारा कोई पर्सनल दोस्त नहीं। हम देखती कि अगर कहीं कोई भी विघ्न पड़ता है तो विघ्न आने का पहला कारण है – दिल का दोस्त एक दो को बना देते हैं। चाहे कभी दिल की

बातों की लेन-देन करना, चाहे दिल बहलाना, हंसी मजाक करना, यह सब सिद्ध करता है कि उनका दिलवर खुदा दोस्त नहीं है।

जब कोई कहते हमें तो मनोरंजन जरूर चाहिए, तो यह शब्द सुनकर मुझे बहुत दिल में आश्चर्य लगता, अरे हम योगियों को कौनसा मनोरंजन चाहिए? मैं समझती हूँ हमारा मनोरंजन बाबा है। बाबा के सिवाए हमारा कोई इस जीवन में मनोरंजन नहीं है। बाबा के कमरे में जाओ, रूहरिहान करो। ज्ञान की आपस में मीठी-मीठी रूहरिहान करो। मुरली दोहराओ, प्रश्न करो, विचार सागर मंथन करो – यही हमारा मनोरंजन है। बाकी टी.वी. देखना, करना यह कोई हमारा मनोरंजन नहीं है। मुझे यह भी रेसपाण्ड मिलता कभी तो थोड़ा मनोरंजन होना चाहिए इसलिए टी.वी. देखते हैं और चारों ओर टी.वी. की बहुत बड़ी माया फैली है। इससे न योग लगता, न ज्ञान बुद्धि में बैठता। कितना संगम की यह अनमोल घड़ियां व्यर्थ जा रही हैं। इसलिए हे ब्राह्मण बाबा के बच्चों, अब इस टी.वी. अथवा टीबी की बीमारी से मुक्त हो जाओ।

हमें तो बार-बार दिल में यह संकल्प आता कि हरेक यह व्रत जरूर ले कि दादी कम से कम हम 101 दिन मौन व्रत रखेंगे। सेवायें तो न बन्द हुई हैं, न होंगी। जरूरी सेवायें करेंगे, बाकी मौन में रहेंगे। तो मैं हर एक से रिक्वेस्ट करती हूँ कि सभी कम से कम 101 दिन के लिए यह कंगन बांधो कि “किसी भी कार्य में हम धीरे से धीरे, कम से कम बोलेंगे।” हमारा स्लोगन है कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो, सोच समझकर बोलो और सत्य बोलो। दूसरा बाबा हमें मन्त्र देता हे बच्चे, तुम हो व्यास भगवान के बच्चे सच्चे-सच्चे सुखदेव, सुख के देवता। तो हमें संकल्प से वा बोल से सदा सुख देने का ही व्यवहार करना है। और साइलेन्स के बन्धन में बंधकर सच्चे-सच्चे लाइट हाउस, माइट हाउस बनना है, डायमण्ड बनना है। साथ-साथ हर्षितमुख भी रहना है।

अब सभी योग की गुफा में चले जाओ, अन्दरग्राउण्ड हो जाओ। सभी कार्य सम्भालते कम से कम हर एक का योग 4 घण्टा तो जरूर होना चाहिए। अब हर एक अपनी आत्मिक स्थिति को बढ़ाओ, ऐसे समझो अब हमारा पुरानी दुनिया से लंगर उठता है, अब हमें घर जाना है। हरेक छोटा बड़ा सोचे कि आज अगर मेरा शरीर छूटे तो मुझ आत्मा की स्थिति क्या होगी? इसलिए अभी से 18 जनवरी तक हम सबको विशेष मौन भट्टी में रहना है, याद की यात्रा में खोये हुए रहें। ऐसी भट्टी हरेक स्वयं करे जिससे स्वयं भी संतुष्ट रहे, शीतल रहे और उसे देख दूसरों को भी प्रेरणा मिले। अच्छा - ओम् शान्ति।

# मधुवन में चली हुई कार्यशाला

## विषय:- “रहम की खान”

**रहमदिल की परिभाषा** - रहमदिल अर्थात् क्षमाशील। स्वयं के प्रति वा दूसरों के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखना, कल्याण की भावना रखना।

रहमदिल अर्थात् भटकती हुई आत्माओं को ठिकाना दिलाना, भगवान का बच्चा बनाना, अन्धों की लाठी बनना। दूसरों को आप समान बनाना।

### रहमदिल कैसे बने? विधियाँ:

- \* अन्तर्मुखता का अभ्यास निरन्तर करते रहें।
- \* साईलेंस की पॉवर को बढ़ायें।
- \* संकल्प में दृढ़ता हो हम आत्मा भाई-भाई हैं, सर्व के प्रति वृत्ति वा दृष्टि में आत्मीयता हो, अपनेपन की भावना हो।
- \* शुभ चिन्तक स्थिति, दातापन की स्थिति, उपकार की भावना, आचरण में पवित्रता हो।
- \* ये स्मृति हो कि मैं रहम के सागर की सन्तान हूँ... तो स्वतः ही रहम की भावना उत्पन्न होगी।
- \* मैं पूर्वज आत्मा हूँ इस स्वमान में रहने से सर्व के पति अपनेपन की भावना होगी तो रहम की भावना बनी रहेगी।
- \* बाबा की आज्ञा है विश्व परिवर्तन, ये लक्ष्य सामने होगा तो भी रहम की भावना होगी।
- \* सर्व के प्रति मित्रता की भावना।

### रहमदिल की निशानियाँ:

- \* रहमदिल आत्मा सदा देही-अभिमानी स्थिति में रहेगी।
- \* सदा श्रीमत पर चलेंगे और दिनचर्या में एक्क्यूरेट होंगे।
- \* समर्पणमयता होगी।
- \* निरहकारिता होगी।
- \* सर्व को सम्मान देंगे और स्वमान में रहेंगे।
- \* रहमदिल आत्मा के कर्म सुखदाई होंगे।

### रहमदिल स्थिति के फायदे :

- \* रहमदिल आत्मा बापदादा व सर्व की दुआओं के खजाने से भरपूर होगी। पुण्य की पूँजी जमा होती रहेगी।
- \* सदा खुशी बनी रहेगी।
- \* संस्कारों का टकराव नहीं होगा।
- \* बाबा की प्रत्यक्षता सहज कर सकेंगे।
- \* संगठन में एकता रहेगी।
- \* दूसरे के अवगुणों को देख हलचल में नहीं आयेंगे।

## 2) विषय - रूहानी ड्रिल

रूहानी ड्रिल आत्मा को शक्ति स्वरूप बनाने की एक आध्यात्मिक याद की यात्रा है। यह यात्रा आत्मा को उसके सतोगुणी स्वरूप में स्थित कराती है, यह एक सहज ही किया जाने वाला अभ्यास है जिसे कर्म करते हुए सहजता से किया जा सकता है, यह ड्रिल हमें हमारे रूहानी बाप उस मीठे मीठे सिकीलधे बाप शिव से हमें मिलाती है तथा हमें देवता पद की प्राप्ति कराती है।

आत्मा स्वचितन करती है जिससे एकाग्रता की प्राप्ति होती है तथा परमात्मा से सम्बन्ध जुड़ जाता है जिससे परमात्म गुणों की अनुभूति होती है, यही रूहानी याद की यात्रा है। इसे इस तरह विभाजित कर सकते हैं।

आत्मा का ब्राह्मण स्वरूप, फरिश्ता स्वरूप, निराकारी स्वरूप, देवताई स्वरूप और द्वापर से पूज्य स्वरूप का चिंतन तथा आदि अनादि अवस्थाओं का मनन चिंतन। इस ड्रिल के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना जरूरी है।

- 1- ईश्वरीय ज्ञान का मनन चिंतन
- 2- दिव्य गुणों की धारणा (खान-पान वा संकल्पों की शुद्धि)
- 3- मन-वचन-कर्म की पवित्रता
- 4- सच्चाई/सफाई (आत्मिक/शारीरिक/संकल्प)

### दृढ़ लक्ष्य द्वारा प्राप्त होने वाली सिद्धियाँ

आत्मिक दृष्टि, सर्वशक्तियों की प्राप्ति, अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति, माया पर विजय, परिस्थितियों/प्रकृति पर विजय, विकर्म विनाश, कर्मातीत स्थिति का अनुभव, नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धः इससे सभी कर्मेन्द्रियां शीतल हो जाती हैं।

हर कर्म करते हुए प्यारे शिवबाबा से मिलन मनाने तथा शक्तियों को प्राप्त करने का साधन यह रूहानी ड्रिल है। यह हमारे अन्दर अन्तर्मुखता, रूहानियत तथा दिव्य गुणों की धारणा कराती है।

इस ड्रिल से हम प्रकृति सहित सर्व आत्माओं को तमोगुणी से सतोगुणी बनाते हैं तथा शान्ति का प्रकम्पन देते हैं। इस ड्रिल से हम मीठे फूल बन जाते हैं जो सारी दुनिया में अपनी खुशबू बिखेरते हैं। अच्छा-ओम् शान्ति।